पशुपालन भी गाजरघास से प्रभावित

पंतनगरः– आज दिनांक अगस्त 18, 2023 को 18 वाँ गाजर घास जागरूकता एवं उन्मूलन कार्यक्रम के तीसरे दिन का कार्यक्रम शैक्षणिक डेयरी फार्म, नगला, पंतनगर पर आयोजित किया गया। जिसके प्रारंभ में डा. क्रान्ति कुमार, सह–प्राध्यापक, सस्य विज्ञान विभाग एवं सहायक निदेशक, शैक्षणिक डेयरी फार्म ने आये हुये अतिथिगणों डा. एस. पी. सिंह, प्राध्यापक एवं परियोजना अधिकारी, सस्य विज्ञान एवं संयुक्त निदेशक डा. एस. के. सिंह, सहनिदेशक डा. रिपुसुदन कुमार, सहायक निदेशक क्रमशः डा. संदीप कुमार तलवार, डा. सुनील कुमार शैक्षणिक डेयरी फार्म नगला पंतनगर एवं उपस्थित सभी सहभागियों का स्वागत करते हुए गाजर घास जागरूकता अभियान के बारे में अवगत कराया तथा कार्यक्रम को अग्रसर करते हुए डा. एस. पी. सिंह, को कार्यक्रम की बागडोर सौंपी। उन्होनें कहा कि जागरूकता अभियान राष्ट्रीय स्तर पर सप्ताहिक रूप में मनाया जाता है, जिसको सफल बनाने के लिए सभी की प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सहभागिता जरूरी है। साथ ही उन्होनें गाजर घास से होने वाले दुष्परिणामों का उल्लेख किया तथा कृषि वैज्ञानिकों को इसके उन्मूलन में आने वाली चुनौतियों तथा इसके निवारण हेतु जानकारी दी। डा. सिंह ने बताया कि गाजरघास के पौधे में छोटे –छोटे रोयें पाये जाते है जो शरीर के सम्पर्क में आने पर दाद, खाज, खुजली आदि पैदा करते है। धीरे –धीरे ये दाद एक्जिमा का रूप ले जाता है तथा परागकणों के श्वसन तंत्र में जाने से श्वास संबंधित बीमारियां जैसे अस्थमा आदि होने की संभावना होती है। डा. सिंह ने बताया कि पशुओं के लिए भी यह गाजरघास अत्यधिक विशाक्त होती है इसको खाने से पशुओं में अनेक प्रकार के रोग जैसे खुजली, एलर्जी आदि हो जाती है और पशुओं में त्वचा संबंधी अन्य बीमारियां उत्पन्न हो जाती है एवं पशुओं के घाव भरने में समय लगता है। इस घास को खाने से दुधारू पशुओं के दूध में कड़वाहट के साथ – साथ दूध उत्पादन में भी कमी आने लगती है एवं इस दूध को मनुष्यों द्वारा सेवन करने से मनुष्यों में भी कई प्रकार के रोग उत्पन्न हो जाते है। गाजरघास के नियंत्रित करने के लिए देशी गेंदा तथा चकवड़ बहुत लाभकारी है जिसके बीज आस–पास के क्षेत्र में छिड़कने से इस गाजरघास पर काफी हद तक नियंत्रण पाया जा सकता है। रसायनों के प्रयोग के साथ–साथ इसका नियंत्रण मैक्सीकन बीटल (जाइगोग्रामा बाईकोलोरेटा) द्वारा भी किया जा सकता हैं। एक वयस्क बीटल एक पार्थीनियम के पूर्ण पौधें को 6–8 सप्ताह में खा जाता है। इस बीटल में प्रजनन की अद्भुत क्षमता होती हैं एक स्थान पर जहॉ पार्थीनियम अच्छी मात्रा में हो कम से कम 500 से 1000 तक वयस्क बीटल छोड़ने चाहिए। तदोपरांत डा. एस. पी. सिंह ने डा. एस. के. सिंह को आमंत्रित करते हुए सभी उपस्थित गणों का आभार व्यक्त किया तथा गाजर घास से होने वाले नुकसान तथा इसके नियंत्रण की अनेक विधियों को संक्षिप्त करते हुए अपने परिसर को गाजर घास से मुक्त करने हेतु संकल्प लेने की बात की।

अन्त में उपस्थित महानुभावों एवं वैज्ञानिको को मास्क एवं दस्ताने वितरित किए तदोपरान्त उपस्थित कार्मिकों ने फार्म के भीतर मौजूद गाजर घास का उन्मूलन किया तथा मैक्सीकन बीटल कीट छोड़े गए। जागरूकता सप्ताह कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभा में कृषि महाविद्यालय, गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं तकनीकी विश्वविद्यालय, पंतनगर से कृषि वैज्ञानिकों, एस0आर0एफ0, आर0एफ0, डी0पी0ए0 एवं श्रमिकों सहित लगभग 80 लोगों ने भागीदारी की।

गाजर घास
(PARTHENIUM HYSTEROPHORUS)
जागरूकता एवं प्रबंधन सप्ताह
16 से 22 अगस्त
अखिल भारतीय समन्वित खरपतवार प्रबंधन शोध परियोजना
गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर (उत्तराखण्ड)
DWR

(PARTHENIUM HYSTEROPHORUS)
16 से 22 अगस्त